

टाइपिंग शैली से थकान का पता चलता है

हममें से कई लोग कीबोर्ड की मदद से शब्द टाइप करने में काफी समय व्यतीत करते हैं। एम.आई.टी. के शोधकर्ताओं की एक टीम का ख्याल है कि हम जिस ढंग से टाइप करते हैं उससे हमारे दिमाग की हालत के बारे में छुपी हुई जानकारी मिल सकती है। शोधकर्ताओं के दल ने एक अध्ययन किया जिसमें कम्प्यूटर केवल टाइपिंग करने के तरीके से यह पता कर सकता है कि कौन चौकन्ना है और कौन थका हुआ।

शोधकर्ताओं ने इस बात पर ध्यान केन्द्रित किया कि टाइप करते समय कौन-सी खास की (key) ज़्यादा लंबे समय तक दबाई जाती है। उन्होंने कीस्ट्रोक का आकलन करने के लिए एक प्रोग्राम डिज़ाइन किया। यह प्रोग्राम टाइप की जा रही विषयवस्तु पर ध्यान नहीं देता।

इस अध्ययन के लिए एम.आई.टी. दल ने 14 वालंटियर्स लिए - 7 पुरुष और 7 महिलाएं। जब वे पूरी तरह से चौकन्ने थे तब उनसे विकिपीडिया का एक आर्टिकल टाइप करवाया गया। इसके बाद वे गहरी नींद में सो गए और सोने के 70-80 मिनट बाद उन्हें नींद से जगाया गया और एक दूसरा आर्टिकल टाइप करवाया गया। ज़ाहिर है, इस दौरान वे उनींदे थे।



नतीजा यह निकला कि चौकन्नी अवस्था में और उनींदी अवस्था में वे अलग-अलग की (key) को ज़्यादा लंबे समय तक दबा कर रखते थे। यह शोध *साइंटिफिक लेटर्स* नामक शोध पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।

इस टीम के शोधकर्ताओं ने लिखा है कि यह सॉफ्टवेयर रात पाली में काम करने वालों के सिस्टम में एक सुरक्षा उपकरण के रूप में उपयोगी हो सकता है। इससे पता चल सकता है कि कौन नींद की वजह से काम नहीं कर पा रहा है। इस तरह के प्रोग्राम में परिवर्तन करके पार्किन्सन जैसी तंत्रिका सम्बंधी बीमारी का निदान या मॉनीटर करने में मदद मिल सकती है। (*स्रोत फीचर्स*)